UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 06 | April - June 2018

प्रेमचंद, निराला और नागार्जुन की रचनाओं में दलित यथार्थ: एक विवेचना

डॉ. जागृति

सार

हिन्दी साहित्य में आधुनिकता की दस्तक ने युगांतकारी बदलाव किए। नयी चेतना ने गैरबराबरी के सभी मंसूबों से संघर्ष का मन बनाया । दलित जीवन के यथार्थ से रू-ब-रू होना आधुनिक साहित्य की एक मुख्य चेतना थी। इन स्वरों में सबसे पहली और मुखर आवाज प्रेमचंद की सुनायी पड़ी। उन्होंने उन्हें नायकों का दर्जा दिया, जिन्हें पारंपरिक साहित्य त्याज्य या घृणास्पद मानता था। उनके रुख पर तत्कालीन आलोचक बिदके और उन्हें घृणा का प्रचारक कहा। अभी भी ऐसे आलोचकों की कमी नहीं, जिनका यह दावा होता है कि साहित्य तो साहित्य होता है, उसमें असहमति, विद्रोह और गैरबराबरी को पाटने के प्रयास से संघर्ष की अनुगूँज नज़र आये तो वह प्रचारवादी होता है। सौंदर्य शास्त्र के कलात्मक मान दंड क्षतिग्रस्त होते हैं। लेकिन जैसे जीवन और समाज की समग्रता के लिए शोषण की हर समझ से असहमत होना जरूरी है, उसी तरह साहित्य की समग्रता के लिए यह जरूरी है कि हर स्वर को आवाज़ मिले। निस्संदेह दलित साहित्य की पड़ताल उसका हिस्सा है। दलित चेतना की पड़ताल करते समय हमें अनेक गैरदलित साहित्यकारों का रचना संसार भी नज़र आता है। जिनमें सबसे मुखर आवाज प्रेमचंद, निराला और नागार्जुन की है।

मुख्य शब्द: पारंपरिक साहित्य, प्रचारवादी, आधुनिकता, सौंदर्य शास्त्र, गैरदलित साहित्यकार, आदि।

परिचय

प्रेमचन्द की पहली और आखिरी कहानी दलित जीवन व चरित्र से जुड़ी है। प्रेमचंद ने "मेरी पहली रचना" के रूप में जिस (कहानी का नाम नहीं है) कहानी का उल्लेख किया है, वह छात्र-जीवन में लिखित एक संस्मरणात्मक कहानी है। इस कहानी में उनके मामा का चित्रण है, जिनका संबंध एक दलित स्त्री से है। कहानी में मामा के पकड़े जाने पर दलित जमकर उनकी पिटाई करते हैं, जिसका वर्णन प्रेमचन्द विनोद भरे लहजे में करते हैं। कुछ ही दिनों बाद उन्होंने इस कहानी को फाड़कर फेंक दिया। उनकी अन्तिम कहानी "कफन" भी दलित-जीवन से ही संबंधित है। युवा आलोचक राजीव रंजन गिरि ने अपनी पुस्तक 'घासवाली' संकलन में प्रेमचन्दर की दलित-जीवन से जुड़ी कहानियों का दो भागों में विभाजन किया है- दलित-जीवन से संबंधित कहानियाँ और दलित-सवाल से संबंधित कहानियाँ। दलित सवाल से संबंधित पहली कहानी 1911 में प्रकाशित "दोनों तरफ से" है।

प्रेमचंद के कथा संसार में दलित स्त्रियाँ

दलित स्त्रियाँ जिस दुहरे अभिशाप यानी जातिगत लांछन के साथ यौन-उत्पीड़न का शिकार बनती हैं, वह दलित पुरुष के शोषण से कहीं अधिक तकलीफदेह है। भावनात्मक और देहिक शोषण की शिकार दलित स्त्रियों में इस नारकीय यातना के कारण प्रतिरोध और विद्रोह का स्वर पुरुषों की अपेक्षा अधिक साहसपूर्ण

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 06 | April - June 2018

है। प्रेमचन्दर कदाचित इस सच की मनौवैज्ञानिकता से अच्छी तरह वाकिफ थे। यही कारण है कि दलित शोषण, उत्पीड़न से संबंधित उनकी कहानियों में पुरुषों की अपेक्षा स्त्री-पात्र अधिक मुखर हैं।

धर्म के नाम पर बढ़ते पाखंड और कथित राष्ट्रवादियों के आल्हाद के बीच दलित-जीवन और प्रश्नों को प्रेमचन्द के रचना-संसार के आलोक में देखना एक विचारोत्तेजक और दिलचस्प अनुभव है। उदाहरण के लिए प्रेमचंद द्वारा लिखित 'मंदीर', 'पूस की रात' तथा 'कफन' इन कहानियों स्त्री-पात्रों की वेदना, पीड़ा, जीवनानुभव और संघर्षशीलता को देख सकते हैं।

दलित जीवन के अन्य संदर्भ

'मंत्र' कहानी दलित-प्रश्न को जिस तेवर से उठाती है, वह उस काल की शायद अन्य कहानियों में दुर्लभ ही है। लीलाधर पंडित हिन्दू महासभा की ओर से इस्लाम का मुकाबला करने के लिए मद्रास भेजे जाते हैं। वहाँ मलिन बस्ती के चाण्डालों की शुद्धि का प्रयास करते हैं, पर उन पुनरुत्थानवादी भाषणों को मलिन बस्ती का बूढ़ा चौधरी दारुण यथार्थ के अर्थवत्ता भरे प्रश्नों द्वारा निरुत्तर कर देते हैं। मुल्ला के बहकावे में दीन की सलामती और मजहब की दुहाई से प्रेरित हो गए मुसलमान पंडित पर जानलेवा हमला कर देता है। पंडित की मौत की खबर फैल जाती है। हिन्दू महासभा पंडित की मूर्ति व अन्य उपक्रमों के नाम पर चंदा उगाही में जुट जाती है। पर दरअसल पंडित की जान वही चौधरी बचा लेते हैं, जिसके साथ पंडित ने कभी अच्छा व्यवहार नहीं किया था। चौधरी भी बीमार पड़ता है तो पंडित जान लगाकर उसकी जान बचाते हैं। लम्बे संग-साथ ने उन्हें दिल जीतने का मंत्र दे दिया। अब पंडित लीलाधर का पूरी तरह रूपान्तरण हो गया। 'कफन' कहानी शोषित और दलित तबके के निर्मम 'डी ह्यूमनाईमेशन' की प्रक्रिया का संवेदनशील साक्ष्य प्रस्तुत करती है। जिस महाजनी सभ्यता ने घीसू-माधव जैसे चरित्रों को कहीं का न छोड़ा है, उनके प्रति कहानी इस अर्थ में खड़ी होती है कि घीसू-माधव कफन के रुपयों से भरपेट खाना खाते हैं और गम-गारत करने के लिए छककर शराब पी जाते हैं। कहानी एक साथ सामंतवाद, धर्म के तथाकथित सौदागर ब्राह्मण और पालोक के छंदम पर प्रहार करती है। कहानी में घीसू अपने बेटे माधव से कहता है, 'हाँ, बेटा वह बैकुण्ठ में जायेगी। किसी को सताया नहीं, किसी को दबाया नहीं। मरते-मरते हमारी जिन्दगी की सबसे बड़ी लालसा पुरी कर गयी। वह बैकुण्ठ में ना जायेगी तो क्या ये मोटे-मोटे लोग जायेंगे, जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं और अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मन्दिरों में जल चढ़ाते हैं?" कहानी अपने प्रतिपक्ष को जिस साफगोई से पहचानती है, वह दुर्लभ है। एक और अमर कहानी "सदगति" पर एक निगाह डालना मुनासिब होगा। जिन अवर्णों के श्रम और पसीने से तथाकथित वर्णश्रेष्ठ पंडित के सभी काम सधते हैं उसी अवर्ण की खाट पर पंडित को बैठना गँवारा नहीं। उपले, सेंठे, भूसा, लकड़ी जो चाहें बामन टोली, ठकुराने, कैथाने के लोग ले जायें, पर चमारटोली की जरुरत का कोई सामान कभी नहीं देंगे, उधार भी नहीं । 'सद्गति' का दुखी चमार मुहूर्त दिखाने पंडित घासीराम के घर जाता है। मुहूर्त देखने की लालच के एवज में

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 06 | April - June 2018

दुखी से भुखे-प्यासे, बेगार काम लिया जाता है। अन्ततः जेठ की तपती दुपहरी में लकड़ी चीरते हुए उसकी मौत हो जाती है। चमारों की बस्ती से कोई लाश उठाने नहीं आया । उनमें गाँव के ही एक गोंड द्वारा यह संदेश फैला दिया गया कि पुलिस आयेगी व तहकीकात होगी। उधर चमारटोली की औरतें रो-रोकर हलकान होती रही, पर रूदन न थमा। प्रेमचंद लिखते हैं, आधी रात तक रोना-पीटना जारी रहा। देवताओं का सोना मुश्किल हो गया। कहना न होगा प्रेमचन्द की कहानी दलित-उत्पीड़न को महफूज रखने वाली धरती और परलोक दोनों के देवताओं की नींद में खलल डालने की ओजस्विता रचती है।

निराला का साहित्य : दलित जीवन की मार्मिक पहचान

निराला की साहित्य साधना उनके जीवनानुभूत सत्य की अभिव्यक्ति का साहसिक अभियान है। वे अपनी साहित्यिक यात्रा में किसी प्रकार के समझौते को स्थान नहीं देते। कहना न होगा इस परिधि का विस्तार उस दलित, उपेक्षित समाज तक भी है जिसे निराला की संवेदना ने बखूबी पहचाना। सत्य का संधान और उसकी साहसिक अभिव्यक्ति तथा नव्य प्रयोग उनके साहित्य की निजी विशेषता है। निराला ने सतत प्रयोग किये। जितना कथ्य और विषय का वैविध्य निराला में मिलता है उतना अन्य रचनाकारों में नहीं मिलता। वह तोड़ती पत्थर', 'भिक्षुक', 'ककुरमुत्ता' जैसी काव्य रचनाएं साहित्य में उपेक्षित जनसमुदाय की आवाज को मुखरित करती हैं। 'चतुरी चमार' (कहानी) और 'कुल्ली भाट' (औपन्यासिक जीवनी) आम आदमी की उपेक्षित तथा त्रासद गाथा का साहसिक बयान हैं। ये देखकर भी अनदेखे किये गये ऐसे चरित्र हैं जिन्हें साहित्य में स्थान देकर निराला ने अपने साहसिक साहित्यिक अभियान का महत्वपूर्ण मंतव्य पूर्ण किया है। यहाँ निराला छायावादी संस्कारों को तोड़ते हुए साहित्य की नयी जमीन तैयार करते हैं। निराला का मूल्याँकन इन विषयों और चरित्रों के विश्लेषण के बगैर संभव नहीं हैं।

जन-कवि नागार्जुन और दलित प्रतिबद्धता

नागार्जुन का काव्य लोक उनकी व्यापक संवेदनशीलता का प्रमाण है, जो आम आदमी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के केन्द्र में विकसित हुआ है। बड़ी से लेकर छोटी बातों, वस्तुओं, घटनाओं, जीव-जगत पर तादात्म अनुभव से मुक्त होकर उन्होंने शब्दों और विचारों से युक्त जीवंत चित्र रचे हैं। उनका कवि व्यक्तित्व जिस रचना संसार को निर्मित करता है, उसमें गाँव, शहर, खेत-खलिहान, राजनीति, आम आदमी और भारतीय परिवेश का यथार्थ गंभीर रूप में मौजूद हैं। नागार्जुन की लोकसम्पन्न कविताओं में चटक लोकरंग और गहरी जनपदीय संवेदना मिलती है। उनमें सचेतन और प्रतिबद्ध रूप से समाज को बदलने का संकल्प मौजूद है अत: उनकी कविता का संघर्ष जनता की आर्थिक और सामाजिक मुक्ति का संघर्ष है। अपनी प्रतिबद्धता को स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं-

“प्रतिबद्ध हूँ
सम्बद्ध हूँ
आबद्ध हूँ

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 06 | April - June 2018

प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ, प्रतिबद्ध हूँ-
बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त
संकुचित 'स्व' की आपाधापी के निशेधार्थ"

कवि की प्रतिबद्धता बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय की केन्द्रीयता की प्रतिबद्धता है। संबद्धता से निर्मित उनके काव्य लोक का फलक व्यापक और विशाल है, जिनसे गुजरते हुए विभिन्न अनुभव संदर्भो से विशिष्ट साक्षात्कार होता है। जनकवि नागार्जुन लोकतंत्र के पहरेदारों पर कड़ी नज़र रखते हैं। जनता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और जबाबदेही का ईमानदारी से निर्वाह करते हुए भयमुक्त सवाल करते हैं-

"जनता मुझसे पूछ रही है, क्या बतलाऊँ?
जनकवि हूँ मैं साफ कहूँगा, क्यों हकलाऊँ ?"

ये बातें नागार्जुन को अपने दौर के अन्य कवियों से अलग करती हैं। वे एक एक्टिविस्ट की तरह अपनी कविता में उपेक्षित, मजलूम, शोषित और हासिये पर कर दी गयी जनता का पक्ष रखते हैं। उनकी कविता का जनपद इस यथार्थ से भिन्न नहीं है। उन्होंने भारत के किसान, मजदूर, स्त्री, दलित और आदिवासी समस्याओं पर केन्द्रित कविताएँ लिखीं। 'तालाब की मछलियाँ', 'चीड़ बनों के निबिड़ टापू' और 'हरिजन-गाथा' नागार्जुन द्वारा रचित विशिष्ट तथा चर्चित कविताएँ हैं।

उपसंहार

दलित जीवन और संवेदना से संबंधित गैरदलित लेखकों में तीन महत्वपूर्ण रचनाकारों प्रेमचंद, निराला और नागार्जुन के साहित्यिक अवदान से आपने परिचय प्राप्त किया। आधुनिकता की दस्तक ने साहित्य की परिधि का आधुनिक विस्तार भी किया। इस परिधि में दलित जीवन की चिंताएं भी मुखरित हुईं। प्रेमचंद, निराला और नागार्जुन ने दलित संवेदना को बखूबी पहचाना। वे दलित जीवन की चौतरफा समस्याओं से अपनी रचनाओं के माध्यम से ताउम्र जूझते रहे। इन रचनाकारों की रचनाओं में शामिल कथा, उपन्यास और कविता के संसार ने दलित संवेदना की जो समझ पैदा की, वह हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विरासत साबित हुई ।

संदर्भ सूची

[1] प्रेमचंद के विचार भाग- एक, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण 2010.
[2] ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
[3] सं. सदानंद शाही : दलित साहित्य की अवधारणा और प्रेमचंद, प्रेमचंद साहित्य संस्थान, गोरखपुर, 2002.
[4] दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, ओम प्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

[5] दलित विमर्श की भूमिका, कंवल भारती, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद

[6] दलित साहित्य आंदोलन, डॉ. चंद्रकुमार वरठे, रचना प्रकाशन, जयपुर

[7] दलित चेतना, साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार, रमणिका गुप्ता, समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली

[8] मराठी दलित कविता और साठोत्तरी हिंदी कविता में सामाजिक और राजनीतिक चेतना, डॉ. विमल थोरात, हिंदी बुक सेंटर (प्रकाशन) दिल्ली

[9] चिंतन की परंपरा और दलित साहित्य, (सं.), डॉ श्यौराजसिंह बेचेन, डॉ. देवेन्द्र चौबे, नवलेखन प्रकाशन, हजारीबाग

[10] डॉ. आंबेडकर, संपूर्ण वाङ्मय, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली

[11] कांग्रेस और गांधी ने अछूतों के लिए क्या किया? डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, अनु.जगन्नाथ कुरील; समता साहित्य प्रकाशन, लखनऊ